काव्य संग्रह : जय श्री राम

संपादक : कृष्ण कुमार शर्मा 'सुमित'

प्रकाशक : राष्ट्रीय चेतना परिवार बेंगलुरु, वर्ष 2024

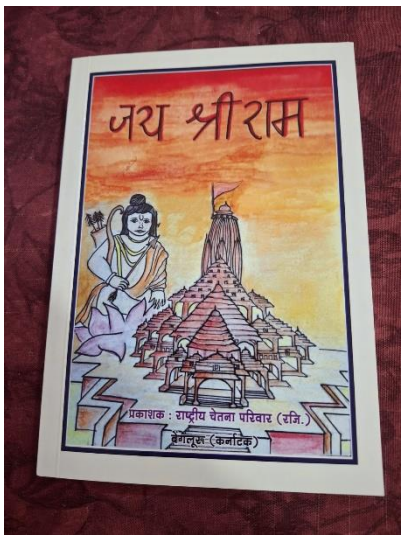

प्रस्तुत संग्रह भगवान श्री राम, जिन्हें हम मर्यादा पुरुषोत्तम भी कहते हैं, के जीवन वृत्त को दर्शाती हुई कविताओं को संग्रहित करके जन सामान्य के सम्मुख प्रस्तुत किया गया है। इस संग्रह में लगभग 30 साहित्यकारों ने अपने-अपने हृदय के उद्‌गारों को काव्य के रूप में प्रकट किया है। संपादक कृष्ण कुमार शर्मा 'सुमित' ने संपादकीय में प्रारंभ में ही स्पष्ट कर दिया है कि इन रचनाओं के माध्यम से प्रभु श्री राम के जीवन चरित्र से प्रेरणा लेकर हम अपने जीवन को और अधिक सार्थक तथा उद्‌देश्य पूर्ण बना सकते हैं । इसी मूल उद्‌देश्य को लेकर प्रत्येक रचनाकार आगे बढ़ते हुए समाज के लोक कल्याण हेतु अपनी बात कहते हैं।

प्रारंभ में **प्रोफेसर अरविंद गुप्ता** जी की रचना है

‘राम बसे हैं जन गण में हमारे ।

राम बसे कण-कण में हमारे।

आ जाएगा रामराज, उज्जवल भविष्य हमारा होगा।

आगे वे सरल शब्दों में कहते हैं -

स्वागतम स्वागतम आओ करें श्री राम का वंदन

करें राम का अभिनंदन ।

राम ही मेरे आदर्श हैं राम ही मेरे चिंतन ।

उर्मिला श्रीवास्तव ने कुंडलिया छंद सहित अपनी विभिन्न रचनाओं के माध्यम से उस अद्‌भुत क्षण का इस प्रकार आनंद लिया है-

हुआ राम मय यह जग सारा पूजन के सब थाल सजाओ

जागो जागो देशवासियों ढोल मजीरे शंख बजाओ ।

दुल्हन सी सज गई अयोध्या वेद मंत्र की तान सुनाओ ।

नव प्रभात में राम की बोलो जय जय कार।

राम सिया के वंदना 'उर्मी' करे सत बार ।

संग्रह पढ़ते-पढ़ते और आगे बढ़े तो **मंजू गुप्ता** शुभ प्रभाती, शुभ घड़ी, राम मय भोर, राम जन्म राम राज्य फिर आएगा, शीर्षक से संग्रहित सृजित रचनाओं में निम्नवत संपूर्ण राममई दिखाई देती हैं।

मंगल घट भरो आज शुभ बेला सुखद काज।

रंगोली द्वारा द्वार, फूलों के साजे हार ।

वर्षों बाद हुई अब पूरी, फली है सब की आस।

दर्शन की प्यासी अंखियों की बुझ जाएगी प्यास।।

****

राम का धाम कहां राम का नाम जहां

बसे मन में जो राम तम का विराम वहां

कविता के माध्यम से **काबूरी नाग लक्ष्मी 'गगन'** के लिए तो राम हर दशा में नाम में बसे हुए हैं। उनकी रचना 'दिव्यता का नजारा' में कुछ ऐसी ही भक्ति भावना को सन्मुख रख दिया गया है।

राम सिया राम कहते ही मन मन्त्र मुग्ध हो जाता है।

मां तरंग पुलकित होकर सब तिमिर भाग जाता है।

मत्तगन्ध सवैया के द्वारा **कुमार गौरव अजितेंदु** भाव विभोर होकर कहते हैं---

धन्य वहां बलिदान हुए नर जो सब राघव के अनुरागी ।

राम उन्हें रख ले निज धाम अन्य मिले उनके सम त्यागी ।।

उनके अन्य सवैये भी बहुत अधिक भावपूर्ण बन पड़े हैं । 'मैं था तेरे मंदिर में....' कहकर वे अपना एक नवगीत राम भक्ति में लिखते हैं।

बेंगलुरु नगर की लोकप्रिय कवित्री **स्वीटी सिंघल** की एक-एक रचना बरबस ही राम के चरणों की ओर खींच लेती है । 'कृपा करो हे नाथ' रचना मैं स्वीटी सिंगल की प्रार्थना बहुत ही भव्य बन पड़ी है---

हे नाथ इस जगत में कोई नहीं हमारा। बिन आपकी कृपा के होगा नहीं गुजरा।।

इससे आगे स्वीटी सिंघल इस प्रकार अपने भाव व्यक्त करती हैं -

मुक्त करने फिर धरा को पाप से भगवान ।

विष्णु के अवतार जन्में बन रहे इंसान ।।

मन वचन से शुद्ध है जो शुद्ध जिसके काम ।

उस हृदय हरदम बिराजे भक्त वत्सल राम ।।

डॉ रजनी शाह भी अपनी भावनाओं को व्यक्त करने में पीछे नहीं रही हैं। वह कहती हैं-

झोपड़ी में राम, महलों में राम,

अब तो गांव से नगर तक है राम ही राम।

हर्षित मन है हर्षित जीवन है, सब का सब राम धुन है ।

वे और आगे लिखते हैं - राम आए हैं राम गए ही कब थे। राम हमेशा से ही आए हुए हैं।

प्रतीक्षा तिवारी सदियों की पीड़ा को हृदय में छुपाए हुए अपने उद्गार इस प्रकार व्यक्त करती हैं---

सदियों से संघर्ष रहा जिस अवधपुरी के धाम का,

आज स्वप्न साकार हुआ है मंदिर के निर्माण का।

प्रभु राम की वंदना में प्रतीक्षा तिवारी तन्मय होकर निम्न प्रकार कहती हैं---

हे सृष्टि नियंता जग पालक, राजीव नयन हे अविनाशी।

तुमको ही तो ध्याये निशिदिन, मृत्युंजय कैलाश वासी।।

गीता चौबे 'गुँज' ने वर्तमान दशा से पीड़ित संसार के उद्धार हेतु प्रभु राम का स्मरण इन सुंदर शब्दों में बहुत ही अनूठे ढंग से किया है---

हे रघुनंदन दानव भंजन, कहां छुपे हो राम ।

एक बार फिर से आ जाओ, छोड़ स्वर्ग का धाम ।

मर्यादा सब भूल रहे हैं, भूले सब आचार ।

कितनी स्वर्णिम रही विरासत थे ऊंचे संस्कार।।

प्रभु राम के जन्म तथा बालपन के सुलभ चित्रण चौपाई छंद में कितनी सजीवता से किया है यह देखते ही बनता है ---

जन्मे नवमी तिथि रघुराई। खुशियों की सरिता लहराई।।

दशरथ भवन उठी किलकारी। हर्षित थी तीनों महतारी।।

ठुमक रहे बालक जब द्वारे। धरती पर झुक चले सितारे।।

करें नगर वासी यह बाता। मन तब हर्षित होकर गाता ।।

संपादक **डॉ कृष्ण कुमार 'सुमित'** ने कहानी के रूप में श्री राम कथा को इन शब्दों में पिरोया है–

सुनो सुनाएं एक कहानी नगर अयोध्या धाम की,

पतित पावन दशरथ नंदन पुरुषोत्तम श्री राम की।

'मेरे राम लाल' नाम के शीर्षक से राम की महिमा का वर्णन इन शब्दों में करते हैं-

राम लला तुम ही कर्ताधर्ता जग के पालनहार लला।

भक्तों के दुख हरता दुष्टों के तुम काल लला।।

दया धर्म की रीति बताते, समता के आधार लला।

बाल्यकाल श्री राम शीर्षक रचना में **आभा मेहता अधिकारी** पूरे समर्पण के साथ इस प्रकार प्रार्थना रत हो गई हैं--

इस कलयुग में श्री राम आइये लिए मानवता की बाट संवारें

दशरथ के घर जन्मे राम। कौशल्यानंदन कहलाए राम ।।

अयोध्या वासियों के प्यारे राम। कैकई के दुलारे राम ।।

राजीव कुमार गुप्ता ने राम की महिमा का वर्णन इस प्रकार किया है---

हमने प्रण को किया है पूरा, मंदिर वहीं बनाया है।

22 जनवरी को हुई प्राण प्रतिष्ठा, पूरा जग हर्षाया है।।

डॉ. बी निर्मला की तीन रचनाएं संग्रह में संग्रहीत हैं। 'प्रभु राम के इंतजार में' शीर्षक की रचना यद्यपि अतुकांत है फिर भी उनका शिल्प विन्यास बहुत ही उच्च कोटि का है।

आज भी बैठी है शबरी झूठे बेर लिए

न्याय की आश में पलके हैं बिछाए

खड़ी पाषाण अहिल्या भी इंतजार में

प्रभु श्री राम के चरण स्पर्श करने।

राम के नाम का स्मरण करती हुई कवित्री बी. निर्मला कहती हैं---

मिट जाएंगे जीवन के सारे दुख दर्द और जीवन की बगिया जाएगी महक

सच्चे मन से जब करोगे प्रभु को याद, सुन लेंगे वह जीवन की सारी फरियाद ।

करनल प्रवीण त्रिपाठी ने भी भव्यता पूर्ण सवैया लिखकर संग्रह की शोभा बढ़ाई है।

दीपक थाल लिए कर में, शुभ मंगल गीत सभी मिल गायें।

भ्रात सिया संग राम लाल छवि देख सभी हिय से हर्षायें।

शुभम अमर पाण्डेय ने भी क्या खूब चित्रण किया है---

आज विराजे प्रभु भवन में, हृदय है गदगद नयन सजल है।

सकल विश्व हुआ राम रंग में आज मानाओ राम दिवाली।।

बेंगलुरु नगर की लोकप्रिय कवयित्रि श्री राम की उपासिका **डॉ. कविता सिंह प्रभा** ने राम के दोहे निम्नवत सृजित किये हैं-

राम नाम जपते सभी, घबराए जब प्राण।

सिया राम के नाम से, तीर जाए पाषाण।।

वे आगे लिखती हैं --

श्री राम आओ श्री राम आओ, घर आओ प्रभु घर आ जाओ।

हम अज्ञानी तुम हो स्वामी, हृदय बसे तुम अंतर्यामी।

आशा रानी शरण ने वर्णित किया है--

वर्षों के विवाद के बाद भव्य मंदिर में प्रभु पधारे,

प्रभु श्री राम धरा पर आए ,आओ मिलकर खुशी मनायें ।

रिचा पाठक पूर्ण दीन भाव से भगवान राम का स्मरण निम्न प्रकार से करती हैं---

दीन दयालु हो प्रभु तुम रखना अपने नाम का मान ।

तन हर्षित है मन हर्षित है शकल देश जन- जन हर्षित है।

राम नाम की गूंज फैल रही तिहु लोक।

हर्षित मन मयूर है हर लिए सारे शोक।

सरल शब्दों में अपनी बात कहने की विशिष्ट लेखनी की धनी **खेम किरण सैनी** की सरलता का तो कोई जवाब ही नहीं है---

विष्णु के अवतार हो सृष्टि के सृजन हार हो,

मुख से क्या महिमा का गान करूं प्रभु , तुम अपरंपार हो ।

राम की प्रासंगिकता के बारे में खेम किरण लिखती हैं–

कलयुग में जन के तारक हो।

राम नाम है जब तक मनभावक, हर युग में तुम प्रासंगिक हो ।

कविता पनिया राम नाम की लगन डोर इस प्रकार लगाये हुई कहती हैं–

मेरे मन का मंत्र तुम ही हो, विष्णु के अवतार।

यत्र सर्वत्र तुम्ही हो, निर्गुण और साकार।।

गणेश यादव 'गौरव' इस प्रकार वर्णन कर रहे हैं कि-

मची है आज अवध में धूम, लोग सब रहे प्रेम से झूम।

त्याग दो दम्भ मोह मद काम । सहज मिल जाएंगे श्री राम ।।

बेंगलुरु की लोकप्रिय गीतकार **सुधा अहलूवालिया** का गीत इस प्रकार सब का मन मोह लेता है-

आज त्रेता युग हुआ साकार कलयुग में बधाई।

विश्व आनंदित सुभग बेला तरुण संस्कृति सजाई ।

प्रेम रस ढलका हृदय में अक्ष जलधर अविरण है।

भाल पर आशीष देते रश्मि कर मुद आभरण है ।

भगवती सक्सेना गौड जी का गीत 'मेरे राम' भी इसी आराधना को और आगे बढ़ाता है।

ब्रह्मांड के श्री राम तुम्हें आना होगा ।

चारों और अराजकता फैल रही, अमन शांति लाना होगा ।।

रचना मिश्रा अपने आराध्य श्री राम से निम्नलिखित वरदान मांगती हैं ---

प्यार बांट प्यार पाऊं, मैं भी अब कुछ राम बनूं।

जीवन की लक्ष्मण रेखा पर स्वधर्म का ध्यान धरूं।।

करुणा लक्ष्मी एन ने भगवान श्री राम के नाम को इस प्रकार आत्मसात किया है–

आस्तिक की जीभ पर नाच राम नाम,

नास्तिक भी मुख पर लाते राम नाम।

अरुणा चाबा के श्री राम उनके सम्मुख खड़े हैं वह उहापोह में है कि वह उनको कहां बिठाएं।

मन के द्वार खड़े राम जी उनको मन में कैसे बिठाऊं

कोई तो बता दे मुझको मनवा मन को मंदिर कैसे बनाऊं।

मनजीत कौर के कण-कण में प्रभु राम बसे हैं । वे सहज शब्दों में निम्न रूप आराधना कर रही हैं--

करुणा के सागर हे रघुवर दुषटों के संहारक हैं रघुवर।

पल्लवी एन कुलकर्णी राम के प्रति इस तरह समर्पित हैं-

मर्यादा में रहकर रहने का संदेश दिये थे आप।

राजा हो या रंक न्याय को ही श्रेष्ठ माने आप।।

लिखने को बहुत कुछ है किंतु शब्दों की सीमा के वश में केवल इतना ही कह रहा हूं कि इस संग्रह को सभी रचनाकारों ने पूरे समर्पण और मनोयोग से लिखा है। भक्त जनों में यह संग्रह महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त करेगा।

दर्शन बेज़ार
आगरा
9760 190692
०१/१/२०२५

****

समीक्षक परिचय :

नाम : दर्शन 'बेज़ार'
पूरा नाम: दर्शन प्रकाश कुलश्रेष्ठ
जन्म तिथि: 22 नवंबर 1948
जन्म स्थान: ग्राम पचगाईं खेड़ा जनपद आगरा उत्तर प्रदेश
पिता: स्व ० श्री नौरंगीलाल
माता: स्व ० श्रीमती सुशीला देवी
शिक्षा: बी० एससी० ,बी० ई० (Mechanical Engg)
व्यवसाय: उत्तर प्रदेश सार्वजनिक निर्माण विभाग से अधिशासी अभियंता पद से नवंबर 2008 में सेवानिवृत्त

साहित्यिक परिचय: देश मे व्याप्त असंतोष जनित तेवरी आंदोलन मे लगभग 40 वर्ष पूर्व में सम्मिलित होकर सम्वेदनशील नगर अलीगढ़ मे स्थानीय छात्र समूह के साथ साहित्यिक जनजागरण में सक्रिय भूमिका निर्वहन , ग़ज़ल के समानांतर तेवरी विधा के उन्नयन हेतु एक सिपाही के रूप में समर्पित और कुव्यवस्था के विरोध में साहसिक लेखन प्रक्रिया मे लीन कलमकार

प्रकाशन:

तेवरी संग्रह (1) एक प्रहार लगातर (1985)* (2) देश खण्डित हो न जाए (1989)*
(3) ये जंजीरें कब टूटेगी(2010)* , (4) खतरे की भी आहट सुन (2023)*

गीत ग़ज़ल संग्रह : तोड़ पत्थरों को भागीरथ (2011)

पचगाईं दर्पण (पैतृक गांव के इतिहास का संकलन 2011)

वर्तमान में आगरा, बैंगलोर में प्रवास तथा तेवरी विधा के प्रचार प्रसार हेतु निरंतर लेखन **

****